प्रेस विज्ञप्ति

आचार्य महाप्रज्ञ चातुर्मास व्यवस्था समिति

सरदारशहर 331 401

Email : terapanthpr@gmail.com * Fax : 01564-220 233

मनुष्य सारपूर्ण जीवन जीये : आचार्य महाश्रमण

सरदारशहर 6 जुलाई , 2010

आदमी का जीवन चंचल है, अस्थायी है इसमें सार क्या है इस पर ध्यान देना चाहिए। उक्त विचार आचार्यश्री महाश्रमण ने सुगनचन्द पोकरमल बुच्चा के निवास पर उपस्थित धर्म सभा को संबोधित करते हुए धम्मपद और उत्तराध्ययन के तुलनात्मक प्रवचन में व्यक्त किये।

उन्होंन कहा कि जिस तरह से पानी की ओस बिंदू समाप्त हो जाती है इसी तरह मनुष्य का जीवन समाप्त हो जाता है। इस असार जीवन में सार को खोजना चाहिए, अप्रमाद का अभ्यास करना चाहिए। मनुष्य के सामने दो रास्ते हैं एक प्रमाद का और दूसरा अप्रमाद का रास्ता। जो उसे श्रेयस्कर लगे उसे अपनाना चाहिए। अप्रमाद का मार्ग व्यक्ति को मोक्ष की ओर ले जाता है और प्रमाद का मार्ग कठिनाई की ओर ले जाने वाला होता है।

मनुष्य दूसरों की भलाई का काम करे, यह मिटने वाली देह किसी के काम आए, जिससे स्वयं का भी कल्याण होगा और दूसरों का भी कल्याण हो सकता है।

इस अवसर पर पोकरमल बुच्चा परिवार की बहिनों द्वारा स्वागत गीत प्रस्तुत किया गया, कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार ने किया।

चातुर्मास हेतु छापरवासियों ने की जोरदार अर्ज

समय आने पर चिंतन करंगे : आचार्य महाश्रमण

सरदारशहर 6 जुलाई , 2010

आचार्यश्री महाश्रमण के सान्निध्य में संघरूप में आए छापरवासियों ने जोरदार अर्ज की। छापरवासियों का नेतृत्व करते हुए प्रदीप सुराणा ने कहा कि आप हमें 2012 का नहीं तो 2013 का चातुर्मास फरमाने की कृपा करावें, पूरा छापर इसके लिए तैयार है। इस अवसर पर छापर से समागत निर्मल कोठारी, रणजीत दूगड़, चैनरूप दायमा, श्रीमती हर्षलता दुधेडिया, श्रीमती विजया मणोत ने अपनी भावनाएं व्यक्त की। छापर की तेरापंथ महिला मण्डल ने गीत द्वारा अपनी भावना व्यक्त की।

अर्ज के प्रत्युतर देते हुए आचार्यश्री महाश्रमण ने कहा कि छापर के लिए हमने 2012 के चातुर्मास को पुर्नविचार की अपेक्षा जताई थी वह निर्णय छापर समाज को कष्ट देने वाला भी हो सकता है, इन्होंने जो 2012 का नहीं तो 2013 का चातुर्मास करने की अर्ज की है जो उनकी ओर से बात संगत लग रहीं है, पर अभी मुझे और गहराई से सोचने की अपेक्षा है। कुछ समय तक और इंतजार करें।

शीतल बरड़िया

(मीडिया संयोजक)